

मीडिया स्टीरियोटाइपिंग को समझना

रेटिंग:

विवरण: ?????? ?????????????????? ?? ?????????? ??????, ?? ????? ??? ????? ?? ?? ?? ????? ?????????? ?? ??????? ?????? ?????????? ?????????? ?????????? ?? ?????????? ?????????? ?? ?????????? ??????????

श्रेणी: [पाठ](#) , [सामाजिक बातचीत](#) , [परिवर्तन का मुकाबला](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2017 IslamReligion.com)

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य

.'स्टीरियोटाइप' और 'मीडिया स्टीरियोटाइपिंग' शब्द का अर्थ समझना।

मीडिया स्टीरियोटाइपिंग से निपटने के लिए रणनीतियां सीखना।

स्टीरियोटाइप क्या है?

स्टीरियोटाइप एक सामान्यीकरण है जिसका उपयोग लोगों के समूह का वर्णन या अंतर करने के लिए किया जाता है और वे सभी बुरे नहीं होते हैं। हालांकि, स्टीरियोटाइपिंग के साथ समस्या यह है कि वे आमतौर पर अतिरिक्त या अतिरिक्त कर रहे हैं जिससे कुछ लोग अपर्याप्त ज्ञान या समझ के आधार पर दूसरों को आंकते हैं। इसके परिणामस्वरूप विकृत या अधूरी जानकारी को तथ्य मान लिया जाता है।



हम सभी एक पक्षपाती दृष्टिकोण से शुरू करते हैं क्योंकि हमारे पास दुनिया के बारे में केवल एक ही दृष्टिकोण है; हम केवल वही देख सकते हैं जो हमारी आंखों के सामने है, जो हमारे आसपास है उसे सुन सकते हैं और जो हमारे सामने है उसे समझ सकते हैं। इसलिए, जब चीजें हमें स्टीरियोटाइपिंग के साथ प्रस्तुत की जाती हैं तो हम वही देखते हैं जो हम देखने की उम्मीद करते हैं। और हमारी प्रवृत्तियों दूसरों की विशेषताओं को तब तक मोड़ने और विकृत करने की होती है जब तक कि हमारे स्टीरियोटाइप में

फटि न हो जाएं।

स्टीरियोटाइपिंग उपयोगी हो सकती है; यह हमें दुनिया में खुद को खोजने में मदद करता है और यह हमें हमारी जाति, वर्ग, लिंग, धर्म, या संस्कृति आदिकी परिधारण करने में मदद करता है। जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हमें अपने स्वयं के पक्षपात से आगे बढ़ना चाहिए ताकि महत्वपूर्ण विचार कौशल का उपयोग करके अधिक संतुलित राय बना सकें। हम जानकारी को संसाधित करना सीखते हैं और अनुभव और ज्ञान से नष्कर्ष निकालते हैं। मीडिया स्टीरियोटाइपिंग के साथ समस्या यह है कि दिग्दर्शक जितनी जानकारी को आसानी से संसाधित कर सकते हैं उसकी तुलना में कहीं अधिक जानकारी दी जाती है। हम तब कल्पना से तथ्य को अलग करने में असमर्थ होते हैं क्योंकि अन्य लोगों के पक्षपाती विचारों को निर्विवाद सत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। मनुष्य अपने आस-पास की दुनिया को साफ-सुथरे छोटे समूहों में वर्गीकृत करना चाहता है, और उसे ऐसा करने की जरूरत भी है क्योंकि यह हमें दुनिया में अपना स्थान परिधारित करने में मदद करता है और मीडिया इस जरूरत में स्टीरियोटाइपिंग लाभ उठाता है।

मीडिया स्टीरियोटाइपिंग

मीडिया लोगों को ऐसे तरीकों से परिभाषित करने के लिए स्टीरियोटाइपिंग का उपयोग करता है जो दर्शकों या पाठकों के लिए वर्गीकृत करना आसान है। ये मीडिया स्टीरियोटाइप लोगों के समूहों को बना किसी वास्तविक विविधता, गहराई या जटिलता के एक आयाम में कम कर देते हैं। और जब मीडिया निरंतर स्टीरियोटाइपिंग में लगा रहता है, तो वे लोगों के कुछ समूहों का इस तरह से प्रचार करते हैं जो वास्तविकता से दूर होता है। आतंकवाद के खिलाफ युद्ध की शुरुआत से ही व्याप्त मुसलमानों की स्टीरियोटाइपिंग ने इस्लाम और मुसलमानों को वैश्विक मीडिया में सबसे आगे ला दिया है। कवरेज में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है और इस्लाम और मुसलमानों को बहुत बुरा नाम दिया गया है।

आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में शामिल बयानबाजी ने इस्लाम के प्रति भय और घृणा में वृद्धि की जिसके कारण मीडिया कवरेज में वृद्धि हुई, जिसमें अक्सर मुसलमानों को पछिड़ा हुआ और हिसा करने वाला, और इस्लाम को स्वाभाविक रूप से समस्याग्रस्त बताया जाता है। 2014 में स्टॉकहोम में आयोजित एक इस्लामोफोबिया गोलमेज सम्मेलन के अनुसार, मीडिया और इंटरनेट पर इस्लाम और मुसलमानों का नयिमति रूप से अपराध और आतंक के साथ संबंध का प्रचार इस्लामोफोबिया^[1] के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण है। मीडिया स्टीरियोटाइपिंग से पाठकों और दर्शकों में यह धारणा बन जाती है कि आतंकवादी जो मुस्लिम होने का दावा करते हैं, वे सभी मुसलमानों और जीने के तरीके का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब ये सामान्यीकरण दुनिया भर के संपूर्ण और विविध मुस्लिम समुदायों में फैलता है, तो इसका परिणाम घृणास्पद भाषण, घृणा अपराध और भेदभाव के रूप में व्यापक मुस्लिम

वरीधी भावनाओं में होता है।

इस्लाम और कुछ मुसलमानों की हरकतों में फर्क है और मुसलमान होने के नाते हम इसे देख और समझ सकते हैं। हालांकि, जिनका मुसलमानों के साथ कोई संपर्क या संबंध नहीं है, वे अंतर को देखने में असमर्थ हैं, खासकर जब मीडिया दुनिया की घटनाओं को इस तरह से बताता है कि आतंकवादी और मुस्लमि शब्द एक दूसरे से संबंधित हैं। मुसलमानों को बदनाम किया जाता है और इस्लाम को एक हसिक धर्म के रूप में चित्रित किया जाता है।^[2] शब्दों का चयन करना मीडिया निर्माण का एक मूलभूत पहलू है और पक्षपात के प्रसार में योगदान देता है। असमान भाषा का उपयोग और नकारात्मक संदर्भों पर ध्यान देने से हमें वास्तविकता का एक ऐसा संस्करण मिलता है जो सत्य से बहुत दूर होता है।

मीडिया की स्टीरियोटाइपिंग को रोकने के लिए गैर-मुस्लमि क्या कर सकते हैं?

1. तथ्यों की जांच। आप जो कुछ भी पढ़ते या सुनते हैं उस पर विश्वास न करें। तथ्यों पर शोध करें।
2. अपनी भाषा पर ध्यान दें। इस्लामिक आतंकवाद या मुस्लमि आतंकवादी जैसे भावों का प्रयोग न करें।
3. जानकारी रखें। इस्लाम की मूल बातें सीखने का प्रयास करें।
4. एक मुसलमान से मलें। काम पर या अपने पड़ोस में किसी मुसलमान के साथ बातचीत करने की कोशिश करें।
5. स्टीरियोटाइप को चुनौती दें। जब आप इस्लामोफोबिक टिप्पणियां सुनें तो उन्हें चुनौती दें।
6. विविधता का सम्मान करें। लेबल लगाने से बचें और लोगों को उनकी सांस्कृतिक प्रथाओं और रीति-रिवाजों का पालन करने दें।

मीडिया में भाषा के उपयोग और भाषा कैसे सामाजिक वास्तविकताओं का निर्माण कर सकती है, इसके बारे में जानें।

मीडिया स्टीरियोटाइपिंग से निपटने के लिए मुसलमान क्या कर सकते हैं?

1. मीडिया और आम जनता को शक्ति प्रदान करने के लिए संसाधन प्रदान करें।
2. सामुदायिक केंद्रों और पुस्तकालयों में पर्चे और कतिबे वितरित करें।
3. स्थानीय सरकार और मीडिया आउटलेट्स के साथ बैठकें आयोजित करें।
4. स्थानीय समाचार पत्रों के लिए पत्र और राय लिखें।
5. अपने स्थानीय मस्जिद या इस्लामी केंद्र में एक खुला दिन आयोजित करने में मदद करें।
6. गैर-मुस्लिमों को इस्लाम के व्याख्यान या मस्जिद की सभाओं के लिए आमंत्रित करें।
7. अपने गैर-मुस्लिम पड़ोसियों को अपने घर या अपने ईद समारोह में आमंत्रित करें।
8. सामाजिक न्याय के प्रति इस्लाम के समर्पण पर जोर देते हुए स्थानीय दान में शामिल हों।
9. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करें। मुसलमानों द्वारा अपने स्थानीय समुदायों में किए जा रहे असाधारण कार्यों का प्रचार करें।
10. मीडिया के साथ बातचीत करने के लिए मुस्लिम प्रवक्ताओं को प्रशिक्षित करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि टिप्पणियों को जानबूझकर संदर्भ से बाहर नहीं किया जा सके।

ब्रिटन, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के 15 साल और उससे अधिक उम्र के 1000 से अधिक युवा मुसलमानों ने साक्षात्कार में बताया कि इस्लाम और मुसलमानों के बारे में नकारात्मक वर्णन अनुचित, अपमानजनक और नरिशाजनक है।^[3] और यह कहना उचित है कि सभी उम्र के मुसलमान पीड़ित होते हैं जब वे लगातार अपने जीने के तरीके को बदनाम होते देखते हैं, या दुनिया भर में किए गए कई अत्याचारों के लिए उन्हें ज़िम्मेदार ठहराए जाने के बारे में पढ़ते हैं। विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए मजबूत होने के लिए कहना बहुत आसान है लेकिन करना मुश्किल। ऊपर दिए गए सुझाव इस्लाम के बारे में फैले कई मिथकों को दूर करने में मदद करेंगे लेकिन इस बीच हमें धैर्य रखना होगा। हम नमिन्लखित तरीकों से अपने मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण को सुदृढ़ कर सकते हैं:

1. ईश्वर से अपने संबंध को मजबूत करना; समय पर नमाज़ पढ़ें, बार-बार दुआ करें और ईश्वर के नामों का मनन करें।
2. पैगंबरो के धैर्य और सहनशीलता का अनुकरण करने का प्रयास करें जिन्होंने नश्चित रूप से आज की तुलना में अधिक कठिनाइयों का सामना किया था।

3. यह समझे कि सारी शक्ति और ताकत देने वाला केवल ईश्वर है; वह सबसे बुद्धिमिान है और भवषिय देखने में सक्षम है।

4. नश्चिती रहें कि यदपैगंबर मुहम्मद (उन पर ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो) हमारे बीच होते तो हम अपनी इस्लामी पहचान और प्रथाओं से शर्मदि नहीं होते।

फुटनोट:

[1] https://issuu.com/drchrisallen/docs/summary_roundtable_10_june_2014

[2] <http://journals.sagepub.com/doi/abs/10.1177/1748048516656305>

[3] यूनविरसटी ऑफ साउथ ऑस्ट्रेलिया का इंटरनेशनल सेंटर फॉर मुस्लिमि एंड नॉन-मुस्लिमि अंडरस्टैंडिंग ।

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/348>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।